गलातियों

गलातिया प्रदेश के सत्संगों को राजदूत पौलुस का पत्र

पुस्तक की कुछ ज़रूरी बातें

यह पत्र मुक्तिदाता येशु के राजदूत पौलुस ने गलातिया प्रदेश के सत्संगों में येशु-भक्तों के नाम लिखा। गलातिया प्रदेश आज के टर्की देश में है। यह पत्र पौलुस ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए, विशेषतौर पर उन यहूदी भक्त भाइयों और बहनों के नाम लिखा जो दूसरे येशु-भक्तों के चीरा-संस्कार कराने की माँग कर रहे थे। इन कट्टर यहूदी लोगों का मानना था कि चीरा-संस्कार कराने से ही वे पूरी रीति से प्रभु येशु के भक्त बन सकेंगे। यह पत्र "आज़ादी" पत्र के नाम से मशहूर हो गया, क्योंकि इसमें लिखा है कि हमें प्रभु येशु में आस्था द्वारा ही मुक्ति मिली है न कि मोशे के नियम और शिक्षा का पालन करने से। इसका अर्थ यह नहीं कि हम सांसारिक बुरी इच्छाओं के लिए जीवन जिएँ, परंतु परमात्मा की पवित्र आत्मा द्वारा हम पाप से मुक्त और प्रेम से भरा जीवन जिएँ।

प्रार्थना - हे परमात्मा, राजदूत पौलस को गलातिया क्षेत्र के सत्संगियों को यह पत्र लिखने की प्रेरणा देने के लिए आपका धन्यवाद। आपकी कृपा से ही हमें अन्य लोगों के समान धार्मिक कर्म-कांडों को करने के लिए बाध्य नहीं हैं, बल्कि हम दूसरों से प्रेम करने, उनका सम्मान करने और अच्छे कर्म करने के लिए बाध्य हैं।

• • • ■ • • •

1

[1-3]मैं, पौलुस, इस पत्र को लिख रहा हूँ। यह पत्र गलातिया प्रदेश के सत्संगों के लिए है। मेरे साथ इसको भेजने में सभी भक्त भाइयों और बहनों की शुभकामनाएँ शामिल हैं।

हमारे पिता परमात्मा और मुक्तिदाता प्रभु येशु तुम्हें कृपा और शांति प्रदान करें। मैं किसी मनुष्य की ओर से राजदूत नियुक्त नहीं हुआ हूँ, किंतु स्वयं मुक्तिदाता येशु तथा उनके मरने के बाद उन्हें ज़िन्दा करने वाले पिता परमात्मा ने मुझे नियुक्त किया है। [4]प्रभु येशु ने हमारे पापों के लिए अपने आप को बलि कर दिया कि वह हमारे पिता परमात्मा की इच्छानुसार हमें इस संसार के पाप बंधन से मुक्ति दें। [5]परमात्मा का गुणगान हमेशा हो। सत्य परमात्मा की जय!

केवल एक ही मुक्ति का सच्चा शुभ संदेश है

[6]मुझे हैरानी है कि जिन परमात्मा ने मुक्तिदाता की कृपा से तुमको बुलाया है, उन्हें तुम इतनी जल्दी भूलकर किसी दूसरे ही मुक्ति के शुभ संदेश की ओर मुड़ रहे हो जो असल में मुक्ति शुभ संदेश है ही नहीं। [7]वास्तव में केवल एक ही सच्चा शुभ संदेश है। किंतु कुछ लोग हैं जो तुम्हें परेशान करते और मुक्तिदाता के शुभ संदेश में मिलावट करना चाहते हैं। [8]हमने जो मुक्ति का सच्चा शुभ संदेश तुमको सुनाया था यदि स्वयं हम भी या कोई स्वर्गदूत इससे अलग संदेश सुनाए तो वह शापित हो। [9]जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही अब मैं फिर कहता हूँ। जो मुक्ति का शुभ संदेश तुम्हें हम से प्राप्त हुआ है, उससे अलग संदेश, यदि कोई तुमको सुनाता है तो वह शापित हो।

पौलुस मुक्तिदाता के राजदूत कैसे बने

[10]क्या मैं लोगों को खुश करने की कोशिश कर रहा हूँ, या परमात्मा को? यदि मेरा लक्ष्य लोगों को खुश करना होता तो मैं मुक्तिदाता का सेवक नहीं कहलाता।

[11]भक्त भाइयो और बहनो, मैं तुम्हें बताए देता हूँ कि जो शुभ संदेश मैंने तुमको सुनाया था वह मनुष्य से नहीं है, [12]क्योंकि वह मुझे किसी मनुष्य से प्राप्त नहीं हुआ और न किसी ने मुझे उसकी शिक्षा दी, परंतु स्वयं मुक्तिदाता येशु ने मुझे यह शुभ संदेश दिया है।

[13]तुम जानते हो कि मैं एक कट्टर यहूदी के रूप में कैसे रहा करता
था! मैं परमात्मा के सारे सत्संगों को सताया करता था और कोशिश
करता था कि सत्संग बंद हो जाएँ। [14]मैं अपने देश में अपनी उम्र के
अन्य लोगों की तुलना में अधिक धार्मिक यहूदी था। मुझ में अपने
पूर्वजों की प्रथाओं का पालन करने का बहुत जोश था। [15-16]परंतु
परमात्मा ने मुझे माता के गर्भ से ही अपने कार्य के लिए चुना था।
उन्होंने मुझे अपनी कृपा से मुक्तिदाता येशु का राजदूत नियुक्त किया
और वह चाहते थे कि मुझे अपने पुत्र के दर्शन कराएँ जिससे मैं दुनिया
के सभी समाज के लोगों में उनका मुक्ति का शुभ संदेश सुनाऊँ। दर्शन
प्राप्त करने के बाद मैंने इसके बारे में किसी से बात नहीं की [17]और न
मैं यरूशलम में उनके पास गया जो मुझसे पहले मुक्तिदाता के राजदूत
थे। परंतु पहले मैं सीधा अरब देश गया और कुछ समय बाद वहाँ से
फिर दमस्कस शहर को लौट आया।
[18]तब तीन साल के बाद, मैं केफस-पतरस* से मिलने यरूशलम
गया और उनके साथ पन्द्रह दिन रहा। [19]लेकिन वहाँ प्रभु येशु के भाई
याकोब के अलावा और किसी राजदूत से मेरी मुलाकात नहीं हुई।
[20]परमात्मा मेरे गवाह हैं कि जो कुछ मैंने लिखा है, उसमें कुछ भी झूठ
नहीं। [21]इसके बाद मैं सीरिया और किलिकिया के क्षेत्रों में आया। [22]परंतु
यहूदिया प्रदेश के मुक्तिदाता येशु के सत्संग के भक्तों में से किसी
ने भी मुझे नहीं देखा था। [23]उन्होंने यह सुना ही था कि जो व्यक्ति
पहले उन्हें सताया करता था वही अब उस येशु-भक्ति शुभ संदेश का
प्रचार करता है जिसे वह पहले खत्म करना चाहता था। [24]यह सुनकर
कि उन्होंने मेरे जीवन को पूरा बदल दिया था सत्संगी परमात्मा का
गुणगान करते थे।

2

सहमति की स्थापना

[1]चौदह साल के बाद मैं भाई बरनबास और तीतुस के साथ फिर
यरूशलम गया। [2]मैं दर्शन में परमात्मा का आदेश पाकर वहाँ गया था।

---

* **1:18** *केफस-पतरस* - यह "केफस" पतरस के दूसरे नाम से लिखा गया है।

मैंने याकोब, पतरस, और योहन जैसे सत्संग के प्रमुख लोगों के सामने भी उस मुक्ति के शुभ संदेश को रखा जिसको सुनाने के लिए मैं सभी समाज के लोगों के बीच जाता रहा हूँ। मैं जो कर रहा था, उसे बताने के पीछे मेरा मकसद यह सुनिश्चित करना था कि वे सहमत हों और मेरे काम को रोकने की कोशिश न करें। [3]सत्संग के ये प्रमुख लोग मुझसे सहमत थे क्योंकि भले ही मेरा साथी तीतुस ग्रीक समाज से था, उन्होंने यह माँग नहीं की कि वह चीरा-संस्कार कराए। [4]पर चीरा-संस्कार का यह प्रश्न उन झूठे भाइयों के कारण उठा जो हमारे बीच चुपचाप घुस आए थे कि जो आज़ादी मुक्तिदाता येशु में हमको प्राप्त है, उसका भेद लेकर हमसे आज़ादी छीन लें और हमें फिर से रीति-रिवाज़ों की गुलामी में डाल दें। [5]हमने एक पल के लिए भी उनके तर्क को स्वीकार नहीं किया जिससे मुक्ति के शुभ संदेश की सच्चाई में मिलावट न हो। [6]सत्संग के प्रमुख लोगों के प्रचार और मेरे प्रचार में कोई फर्क नहीं था। प्रमुख लोगों के रूप में उनके बड़े नाम से भी मुझे कोई फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि परमात्मा की नज़र में सब समान हैं। [7]परंतु उन प्रमुख लोगों ने देखा कि जैसे पतरस को यहूदी समाज के लोगों में मुक्ति का शुभ संदेश सुनाने का कार्य सौंपा गया वैसे ही मुझे दूसरे समाज के लोगों में यही शुभ संदेश सुनाने का कार्य सौंपा गया। [8]क्योंकि जिस परमात्मा ने पतरस द्वारा यहूदी समाज के लोगों में मुक्तिदाता के राजदूत का कार्य किया, उन्हीं परमात्मा ने मेरे द्वारा दूसरे समाज के लोगों में कार्य किया। [9]याकोब, केफस-पतरस, और योहन ने महसूस किया कि परमात्मा ने मुझे अपनी कृपा का संदेश दिया है। और इन लोगों को सत्संग की रीढ़ माना जाता है। उन्होंने बरनबास और मेरे सामने दोस्ती का हाथ बढ़ाया। यह दिखाने के लिए कि मैं और बरनबास उन लोगों के बीच मुक्ति के शुभ संदेश का प्रचार करते रहें जो यहूदी समाज से नहीं हैं और वे लोग यहूदी समाज के लोगों में प्रचार करते रहें। [10]उन्होंने केवल यह विनती की कि हम गरीबों की मदद करना याद रखें। और मैं भी गरीबों की मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहता हूँ।

अंताकिया शहर में पतरस का ढोंग

[11]कुछ समय बाद जब केफस-पतरस अंताकिया शहर आया, तो मैंने उसे डाँटा और कहा कि जो उसने किया वो गलत था। [12]जब

पतरस पहली बार अंताकिया आया तो वह उन भक्त भाइयों और बहनों के साथ उठता-बैठता और खाता-पीता था जो यहूदी समाज के नहीं थे। परंतु बाद में उसने ऐसा करना छोड़ दिया क्योंकि वह ऐसा करके, याकोब के कट्टर यहूदी मित्रों को जो अंताकिया शहर घूमने आए थे, खुश करना चाहता था। उसने खुद को उन लोगों से अलग कर लिया जो यहूदी नहीं थे क्योंकि उसे डर था कि याकोब के दोस्त क्या सोचेंगे। 13अन्य यहूदी भक्त भाइयों और बहनों ने भी इस ढोंग में पतरस का साथ दिया, यहाँ तक कि बरनबास को भी उन्होंने अपने ढोंगीपन में शामिल कर लिया। 14परंतु जब मैंने देखा कि वे उस सच्चाई का पालन नहीं करते जो मुक्ति के शुभ संदेश में है, तो मैंने सब के सामने केफस-पतरस से कहा, "पतरस, तुम तो यहूदी समाज से हो, परंतु जब तुम पहली बार अंताकिया शहर आए, तब तुम्हें उन लोगों के साथ मिलने-जुलने में कोई परेशानी नहीं थी जो दूसरे समाज से थे। तो तुम उन लोगों को जो यहूदी समाज के नहीं हैं यहूदी रीति रिवाजों का पालन करने के लिए कैसे मजबूर कर सकते हो?

15"तुम और मैं जन्म से धर्मी यहूदी समाज से हैं, दुसरे समाज के लोगों की तरह अधर्मी नहीं हैं। 16हालाँकि, हम जानते हैं कि मोशे के नियम और शिक्षा का पालन करने से किसी के बुरे कर्मों का खाता नहीं मिटाया जा सकता और कोई भी व्यक्ति धर्मी नहीं बन सकता। अपने बुरे कर्मों का खाता मिटाने और धर्मी बनने का एकमात्र तरीका मुक्तिदाता येशु पर आस्था रखना है, और हमने यही किया है।

17"जब हम यहूदी, मुक्तिदाता येशु की शरण में आने के बारे में विचार कर रहे थे तो हमें इस बात का भी पता था कि हम पापी हैं। हमें मुक्तिदाता पर भरोसा है, लेकिन वह हमारे पाप करने को अच्छा नहीं कहते। वह ऐसा कभी कह ही नहीं सकते!* 18वास्तव में, यदि मैं मुक्तिदाता के प्रति अपने विश्वास को तोड़ दूँगा और मोशे के नियम और शिक्षा के आधार पर अपना जीवन फिर से

---

* **2:17** या, "लेकिन अगर हम यहूदी, मुक्तिदाता येशु में आस्था रखने से धर्मी बनने का प्रयास करते हैं, तो कुछ यहुदी लोग कहेंगे कि हमने मोशे के नियम और शिक्षा को छोड़ दिया है इसलिए हम अधर्मी हो गए हैं। वे कहेंगे कि मुक्तिदाता पर आस्था रखने से यहुदी लोग अधर्मी बन जाते हैं। लेकिन उनका यह कहना बिल्कुल गलत है!"

बिताऊँगा, तो मैं अधर्मी हो जाऊँगा। [19]मोशे के नियम और शिक्षा
मुझे सिर्फ यह दिखाते हैं कि मैं एक अधर्मी हूँ। इसलिए मैंने इन
पर भरोसा करना पूरे तरीके से बंद कर दिया है, ताकि मैं परमात्मा
पर पूरा भरोसा कर सकूँ। [20]मेरा पुराना पापी जीवन मुक्तिदाता
के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है। अब मैं जीवित नहीं रहा, बल्कि
मुक्तिदाता मुझ में जीवित हैं। अब जो मैं इस शरीर में जी रहा हूँ, तो
केवल उस आस्था से जी रहा हूँ जो परमात्मा के पुत्र पर है जिन्होंने
मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए स्वयं को बलि कर दिया। [21]मैं
परमात्मा की कृपा का तिरिस्कार नहीं कर सकता, क्योंकि यदि
मोशे के नियम और शिक्षाओं से हम अपने बुरे कर्मों के खाते को
मिटा सकते और धर्मी बन सकते, तो मुक्तिदाता को अपनी बलि
देने की क्या ज़रूरत थी।"

3

आस्था से ही मोक्ष मिलता है

[1]अरे गलातिया प्रदेश के लोगो, तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं
हो गया! तुम लोगों के धोखे में कैसे आ गए? हमने तो तुम्हें
मुक्तिदाता येशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में साफ-साफ
बताया था! [2]मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ। तुमको परमात्मा
की पवित्र आत्मा कैसे प्राप्त हुई? क्या यह मोशे के नियम और
शिक्षा का पालन करने के द्वारा मिली या मुक्तिदाता के बारे में
सुनने और उन पर आस्था रखने के द्वारा मिली थी? [3]तुम इतने मूर्ख
कैसे हो सकते हो? अपने येशु भक्ति जीवन को पवित्र आत्मा की
शक्ति में शुरू करने के बाद, अब तुम अपनी मानवीय कोशिश
के आधार पर उसको आगे ले जाना क्यों चाहते हो? [4]तुमने अपनी
आस्था के कारण बहुत कुछ सहा है। क्या वह कष्ट बेकार था?
बिल्कुल नहीं। [5]परमात्मा ने तुमको अपनी पवित्र आत्मा दी है और
उन्होंने तुम्हारे बीच चमत्कार किए हैं। परंतु क्या वह ऐसा इसलिए
करते हैं कि तुम मोशे के नियम और शिक्षा का पालन करते हो,
या इसलिए कि तुमने मुक्तिदाता के बारे में सुना है और उन पर
आस्था रखते हो?

[6]जैसे कुलपिता अब्राहम ने, “परमात्मा पर आस्था रखी, और
परमात्मा ने उसे धर्मी माना” [7]इसलिए यह समझ लो कि परमात्मा
पर आस्था रखने वाले सभी अब्राहम की संतान हैं। [8]इसके अलावा,
परमात्मा-ग्रंथ में परमात्मा ने उस समय का इंतजार किया कि जब वह
मुक्तिदाता में आस्था के माध्यम से दुनिया के हर समाज के लोगों को
धर्मी बनाएँगे। परमात्मा ने अब्राहम को बहुत समय पहले यह मुक्ति
का शुभ संदेश दिया जब उन्होंने कहा, “दुनिया के हर समाज के लोग
तुम्हारे द्वारा आशीर्वाद पाएँगे।” [9]इसलिए वे सभी जो मुक्तिदाता येशु में
आस्था रखते हैं, वही आशीर्वाद प्राप्त करते हैं जो अब्राहम ने अपनी
आस्था के कारण प्राप्त किया था।
[10]परंतु जो कोई मोशे के नियम और शिक्षा का पालन करके परमात्मा
को खुश करने की कोशिश करता है, वह शापित है। क्योंकि
परमात्मा-ग्रंथ कहता है, “शापित है वह हर एक, जो मोशे के नियम और
शिक्षा में लिखी हुई सब आज्ञाओं को न माने।” [11]यह स्पष्ट है कि मोशे
के नियम और शिक्षा हमारे बुरे कर्मों के खाते को मिटा नहीं सकते और
हमें धर्मी नहीं बना सकते, क्योंकि “परमात्मा में आस्था से ही धर्मी
भक्त मोक्ष प्राप्त करेगा।” [12]आस्था का यह तरीका मोशे के नियम और
शिक्षा के तरीके से बहुत अलग है, जो कहता है, “मोशे के नियम और
शिक्षा का पालन करने से ही एक व्यक्ति को मोक्ष मिलता है।” [13]हमने
मोशे के सभी नियम और शिक्षा का पालन नहीं किया, इसलिए हम इसी
लायक थे कि परमात्मा हमें दंड दें। परंतु मुक्तिदाता ने हमें उस दंड से
बचा लिया। जबकि हमें मृत्यु-दंड मिलना चाहिए था परंतु हमारे स्थान
पर मुक्तिदाता स्वयं क्रूस पर चढ़ गए। परमात्मा-ग्रंथ कहता है, “यदि
किसी को क्रूस पर चढ़ाया जाता है, तो यह दर्शाता है कि परमात्मा ने
उस व्यक्ति को दंड दिया है।” [14]मुक्तिदाता येशु ने ऐसा इसलिए किया
ताकि वही आशीर्वाद जो परमात्मा ने बहुत पहले अब्राहम को दिया था,
संसार के सभी समाजों के लोगों को भी मिले, ताकि हम जिस पवित्र
आत्मा को देने का वादा किया गया था उसे हम आस्था द्वारा प्राप्त करें।

3:6 उत्पत्ति 15:6 **3:8** उत्पत्ति 12:3; 18:18; 22:18; 26:4; 28:14 **3:10** उपदेश 27:26
3:11 हबक्कुक 2:4 **3:12** लेवी 18:5 **3:13** उपदेश 21:23

15 भक्त भाइयो और बहनो, मैं आम ज़िन्दगी का एक उदाहरण देता
हूँ। जब कोई वसीयतनामा एक बार पक्का हो जाता है तब उसे कोई रद्द
नहीं करता है और न उसमें कुछ जोड़ता है। 16 परमात्मा ने अब्राहम और
उसके वंशजों * से की गई प्रतिज्ञाओं के साथ भी ऐसा ही किया है।
प्रतिज्ञाएँ बहुत से वंशजों से नहीं की गई थी, बल्कि सिर्फ एक से की
गई थी और वह है मुक्तिदाता। 17 मैं यही कहना चाह रहा हूँ परमात्मा
ने अब्राहम के साथ जो अनुबंध किया था, उसे 430 साल बाद मोशे
का नियम और शिक्षा रद्द नहीं कर सकते थे। यदि परमात्मा ऐसा करते
तो इसका अर्थ यह निकलता की उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी है।
18 क्योंकि यदि आशीर्वाद मोशे के नियम और शिक्षा का पालन करने
से मिलता है तो फिर परमात्मा की प्रतिज्ञा से नहीं। परंतु परमात्मा ने
अब्राहम को यह आशीर्वाद देने की प्रतिज्ञा की।

19 फिर परमात्मा ने लोगों को मोशे के नियम और शिक्षा क्यों दिए?
यह बाद में आए और यह एक आइने की तरह है जिसमें हम देख सकें
कि परमात्मा की नज़र में हमारे कर्म कितने बुरे हैं। लेकिन यह नियम
और शिक्षा उन वंशज, अर्थात् मुक्तिदाता येशु, के आने तक ही मान्य
थे जिनकी परमात्मा ने प्रतिज्ञा की थी। वास्तव में, स्वर्गदूतों ने मोशे के
नियम और शिक्षा दिए, और उसने लोगों को। 20 एक मध्यस्थ दो पक्षों
के बीच काम करता है। परमात्मा पहला पक्ष हैं, और दूसरा लोग हैं।
परंतु प्रतिज्ञा के साथ ऐसा नहीं हुआ। परमात्मा ने अपनी प्रतिज्ञा सीधे
बात करके अब्राहम को दी।

21 तो क्या मोशे के नियम और शिक्षा परमात्मा की प्रतिज्ञाओं के विरुद्ध
हैं? नहीं! लेकिन इन दोनों के अलग-अलग कार्य हैं। यदि ऐसे मोशे के
नियम और शिक्षा दिए गए होते जिनसे मोक्ष मिल सकता है, फिर तो
नियम और शिक्षा का पालन करने से व्यक्ति के बुरे कर्मों का खाता मिट
सकता है और वह धर्मी बन सकता है। 22 लेकिन परमात्मा-ग्रंथ कहता है
कि हम सभी पाप के गुलाम हैं, इसलिए हम मुक्तिदाता येशु में आस्था
रखने के द्वारा ही परमात्मा के मोक्ष की प्रतिज्ञा को प्राप्त कर सकते हैं।

---

* **3:16** *वंशजों* - या, "बीज" जिसका अर्थ "एक" या "कई वंशज" हो सकता है। इस पद में पौलुस कहते हैं कि "मुक्तिदाता, राजा दाविद के समान, अब्राहम के सभी वंशजों के प्रतिनिधि हैं।"
3:16 उत्पत्ति 12:7; 13:15; 24:7

23मोशे के नियम और शिक्षा ने हमें काबू किया हुआ था और हमें उस
समय तक अपने अधिकार में रखा हुआ था जब तक हमारी आस्था
मुक्तिदाता में नहीं थी। 24वास्तव में, यह नियम और शिक्षा हमारे गुरु
जैसे थे। इसने हमें तब तक सिखाया और हमारी देखभाल की जब
तक हमारी आस्था मुक्तिदाता येशु पर नहीं थी और हम उनके धर्मी
भक्त नहीं बने थे। 25और अब हमारे मुक्तिदाता येशु में आस्था रखने
का समय आ गया है, इसलिए अब हमें मोशे के नियम और शिक्षा जैसे
गुरु की ज़रूरत नहीं है। 26मुक्तिदाता येशु पर आस्था रखने के कारण
तुम सब परमात्मा की संतान हो। 27और जब तुम समर्पण-स्नान लेकर
मुक्तिदाता के साथ जुड़ गए हो, तो मानो तुम ने मुक्तिदाता को वैसे ही
धारण कर लिया है जैसा तुम ने नए वस्त्र धारण किए हों। 28इससे कोई
फर्क नहीं पड़ता कि तुम यहूदी समाज से हो या किसी अन्य समाज
से। इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम मालिक हो या नौकर, या
पुरुष हो या स्त्री। तुम सभी समान हो क्योंकि अब तुम मुक्तिदाता येशु
में आस्था रखते हो। 29और अब तुम सब मुक्तिदाता के साथ जुड़ गए
हो, इसलिए तुम अब्राहम के वंशज हो और परमात्मा की प्रतिज्ञा के
अनुसार उसके वारिस भी।

4

1मेरा मतलब यह है कि वारिस जब तक नाबालिग है और भविष्य
में सारी संपत्ति का मालिक होने पर भी उसमें और सेवक में ज़्यादा
फर्क नहीं होता। 2नाबालिग को उन लोगों की आज्ञा माननी चाहिए जो
उसकी और संपत्ति की देखभाल करते हैं जब तक वह खुद मालिक
नहीं बन जाता। यह उसके पिता तय करेंगे कि ऐसा कब होगा। 3और
मुक्तिदाता की शरण में आने से पहले हमारे साथ भी ऐसा ही था। हम
बच्चों की तरह थे, हम इस संसार के तौर-तरीकों के गुलाम थे। 4परंतु
जब ठीक समय आया परमात्मा ने अपने पुत्र मुक्तिदाता येशु को पृथ्वी
पर भेजा और वह एक स्त्री से पैदा हुआ। परमात्मा के पुत्र ने मोशे के
नियम और शिक्षा का पालन किया 5ताकि मुक्तिदाता येशु हमें मोशे के
नियम और शिक्षा से मुक्त कर सकें, और परमात्मा हमें अपनी संतान
बना लें। 6और अब हम उनकी संतान बन गए हैं, इसलिए परमात्मा ने

अपने पुत्र की पवित्र आत्मा को हमारे मनों में भेजा है, जो "पिताजी, मेरे पिताजी"* कहने के लिए प्रेरणा देता है। 7अब तुम गुलाम नहीं, बल्कि परमात्मा की अपनी संतान हो। क्योंकि हम परमात्मा की संतान बन गए हैं, इसलिए हम उनके वारिस भी हैं।

गुलामी में मत लौटो

8जब तुम परमात्मा को नहीं जानते थे, उस समय तुम उन मूर्तियों के गुलाम थे, जो वास्तव में परमात्मा हैं ही नहीं। 9परंतु तुमने अब परमात्मा को पहचान लिया है या यों कहो कि परमात्मा ने तुमको पहचान लिया है, तो फिर तुम उन शक्तिहीन और बेकार सांसारिक तौर-तरीकों को क्यों अपनाना चाहते हो? एक बार फिर तुम उनकी गुलामी क्यों करना चाहते हो? 10तुम खास दिन, महीने, मौसम और साल को भी शुभ मानने लगे हो। 11मैं डरता हूँ कि कहीं तुम लोगों के बीच मेरी मेहनत और शिक्षा बेकार तो नहीं हो गई।

12प्रिय भक्त भाइयो और बहनो, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मेरे जीवन के उदाहरण से सीखो, जब मैं पहली बार तुम्हारे पास आया था तो मैंने तुम्हारी तरह मोशे के नियम और शिक्षा के बिना जीवन जीने की कोशिश की और तुमने मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया। 13निश्चित रूप से तुम्हें याद होगा कि जब मैं पहली बार तुम्हारे पास मुक्ति का शुभ संदेश लेकर आया था तो मैं बीमार था। 14मेरी बीमारी के कारण तुमको कुछ परेशानी हुई होगी, लेकिन फिर भी तुमने मुझ को छोड़ा नहीं। इसके बजाय तुमने मेरा स्वागत किया जैसे कि मैं परमात्मा के स्वर्गदूतों में से एक हूँ या स्वयं मुक्तिदाता येशु। 15तुम्हारी खुशी कहाँ चली गई? मैं जानता हूँ कि तुम सब मुझसे इतना प्रेम करते थे कि यदि तुम्हारे लिए ऐसा करना संभव होता तो तुम अपनी आँखें निकालकर मुझे दे देते। 16तो क्या सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा दुश्मन हो गया हूँ? 17मेरे विरोधी तुम्हारा मन जीतना चाहते हैं, पर उनका मकसद अच्छा नहीं है। वे तुम्हें मुझसे अलग करना चाहते हैं जिससे तुम उन्हीं

---

* **4:6** *"पिताजी, मेरे पिताजी"* - यहाँ इज़राएल देश की एक भाषा अरामी का शब्द है, "अब्बा" जिसका अर्थ है "पिता," और सामान्य ग्रीक शब्द का अर्थ "पिता" है।

को बहुत मान-सम्मान दो। [18]किसी का मन जीतना अच्छी बात है, परंतु
यह अच्छे मकसद से होना चाहिए और हमेशा के लिए, न कि केवल
उस समय तक जब तक मैं तुम्हारे बीच मौजूद रहता हूँ। [19]मेरे बच्चो,
जब तक मैं तुम में मुक्तिदाता के गुणों को नहीं देख लेता, तब तक मेरे
दिल में तुम्हारे लिए दर्द बना रहेगा। [20]काश! मैं अब तुम्हारे साथ होता
तब मुझे इस तरह से बात नहीं करनी पड़ती। तुमने मुझे उलझन में
डाल दिया।

परमात्मा की प्रतिज्ञा या मानवीय प्रयास

[21]तुम जो मोशे के नियम और शिक्षा के अधीन रहना चाहते हो,
क्या तुम जानते भी हो कि इसमें क्या लिखा है? [22]उसमें लिखा है कि
कुलपिता अब्राहम के दो पुत्र थे, एक सेविका से और दूसरा उस स्त्री
से जो सेविका नहीं थी।* [23]इससे पहले, परमात्मा ने अब्राहम को एक
पुत्र देने का वादा किया था, परंतु उसकी पत्नी सारा गर्भवती नहीं हो
पा रही थी, इसलिए अब्राहम ने अपनी सेविका को राज़ी किया की
वह उसके लिए एक पुत्र को जन्म दे। लेकिन तब कुछ साल बाद
परमात्मा ने अब्राहम को उसकी असली पत्नी के द्वारा एक पुत्र दिया
जैसा उन्होंने वादा किया था। [24-25]इस सब का एक और अर्थ भी है।
दोनों स्त्रियाँ परमात्मा द्वारा अपने लोगों के साथ किए गए एक प्रकार
के अनुबंध को दिखाती हैं। हाजिरा, अब्राहम की सेविका परमात्मा के
उस अनुबंध को दिखाती है जिसे उन्होंने सीनय पर्वत पर किया था।
जो लोग उस मोशे के नियम और शिक्षा के अनुबंध का पालन करते थे,
वे उन नियम और शिक्षा के सेवक हैं जैसे हाजिरा अब्राहम की सेविका
थी। यरूशलम का वर्तमान शहर अरब देश में सीनय पर्वत की तरह है।
यहूदी जो वहाँ के नियम और शिक्षा का पालन करते हैं, सेविका स्त्री
उनकी संतान के समान हैं। [26]लेकिन अब्राहम की पत्नी सारा परमस्वर्ग
में परमात्मा के शहर को दिखाती है जिसे यरूशलम कहा जाता
है। वह कोई सेविका नहीं थी, वह हमारी माँ की तरह है, [27]क्योंकि
परमात्मा-ग्रंथ में सारा के बारे में लिखा है,

---

* **4:22** *जो सेविका नहीं थी* - या, "मुक्त स्त्री" (उत्पत्ति 17)

"बांझ, तुम्हारे पास अभी तक कोई बच्चा नहीं,
और तुम्हें प्रसव पीड़ा नहीं हुई
परंतु अब तुम अपने बच्चे के जन्म के कारण
ऊँची आवाज़ से आनंद का गीत गाती हो!
जो स्त्री बांझ थी
उसके पास सब स्त्रियों से अधिक बच्चे होंगे।"

[28]मेरे भक्त भाइयो और बहनो, तुम सारा के बेटे इसहाक के समान हो। परमात्मा ने जो प्रतिज्ञा की है उसके कारण तुम अब्राहम की संतान हो। [29]परंतु जो तुम से चाहते थे कि तुम मोशे के नियम और शिक्षा का पालन करो, अब तुम पर अत्याचार कर रहे हैं। जैसे हाजिरा के बेटे इश्माएल ने इसहाक को सताया। इश्माएल का जन्म अब्राहम और हाजिरा के बीच मानवीय मिलन से हुआ था, लेकिन इसहाक का जन्म परमात्मा की पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा के अनुसार हुआ था। [30]परमात्मा-ग्रंथ कहता है, "सेविका स्त्री और उसके पुत्र को घर से निकाल दो! उसे संपत्ति में से कुछ भी नहीं मिलेगा। जो स्त्री सेविका नहीं थी उसका पुत्र वारिस होगा।" [31]इसलिए मेरे भाइयो और बहनो, हम सेविका के नहीं उस स्त्री की संतान है जो सेविका नहीं थी।

5

प्रेम और आस्था संस्कारों से बढ़कर है

[1]मुक्तिदाता ने हमें सच में आज़ाद किया है। इसलिए डटे रहो और फिर से मोशे के नियम और शिक्षा की गुलामी की जंजीरों में न बंधो। [2]देखो, मैं पौलुस तुम से यह कहता हूँ कि यदि तुम गलातिया प्रदेश के लोगों ने चिरा-संस्कार लेने का निर्णय लिया है, तो मुक्तिदाता से तुम्हें कुछ लाभ न होगा। [3]मैं हर एक चीरा-संस्कार कराने वाले को फिर से बताए देता हूँ कि उसे सभी मोशे के नियम और शिक्षा का पालन करना है। [4]तुममें से जो लोग मोशे के नियम और शिक्षा का पालन करके धर्मी बनने की कोशिश कर रहे हैं, उन्होंने अपने आप को मुक्तिदाता से अलग कर लिया हैं और परमात्मा की कृपा से बहुत दूर चले गए हैं।

4:27 यशायाह 54:1 **4:31** उत्पत्ति 21:10

5परंतु पवित्र आत्मा हमें निश्चित करता है कि मुक्तिदाता येशु में आस्था
रखने के द्वारा हमारे बुरे कर्मों का खाता मिट जाएगा और हम धर्मी बन
जाएँगे। 6क्योंकि अगर तुम मुक्तिदाता येशु के भक्त हो तो इस बात
का कोई महत्त्व नहीं कि तुमने चीरा-संस्कार लिया है या नहीं। केवल
तुम्हारी आस्था का महत्त्व है जो दूसरों से प्रेम करने की प्रेरणा देती है।
7तुम तब तक बहुत अच्छा कर रहे थे जब तक किसी की झूठी
शिक्षा ने तुम्हें सच्चाई के रास्ते पर चलने से नहीं रोका था। 8यह सच
है कि यह शिक्षा परमात्मा की नहीं है जिन्होंने तुम्हें उनके काम करने
के लिए चुना है। 9झूठी शिक्षा उस थोड़े से खमीर के समान है जो सारे
गुंधे हुए आटे में फैल जाता है! 10तुम प्रभु के हो, और यह मुझे भरोसा
दिलाता है कि तुम वही करोगे जो मैं कहता हूँ, बजाय इसके कि कोई
और तुमको कुछ करने के लिए कहे। जो कोई भी तुम्हारे लिए परेशानी
खड़ी कर रहा है उसे दंडित किया जाएगा।
11भक्त भाइयो और बहनो, यदि मैं अभी भी यहूदियों के चीरा-संस्कार
की अच्छाइयों के बारे में प्रचार कर रहा होता, तो बहुत से यहूदी अभी
तक मुझ पर अत्याचार क्यों करते? यदि मैं लोगों को चीरा-संस्कार
लेने के लिए मना नहीं करता तो मुझे प्रभु येशु के क्रूस बलि चढ़ जाने के
बारे में संदेश बताने में ऐसी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ता।
12कितना अच्छा होता कि जो लोग तुम्हारा ज़बरदस्ती चीरा-संस्कार
कराने की कोशिश कर रहे हैं, वे खुद को नपुंसक बना लेते!
13मेरे प्रिय भक्त भाइयो और बहनो, परमात्मा ने तुमको मोशे के
नियम और शिक्षा की जंजीरों से मुक्त होने के लिए चुना है। इसलिए
अपनी आज़ादी को इस तरह से मत लो कि अब तुम जो चाहे कर
सकते हो। इस आज़ादी को प्रेम से एक दूसरे की सेवा करने के
अवसर के रूप में इस्तेमाल करो। 14क्योंकि सारे मोशे के नियम और
शिक्षा का निचोड़ इस एक आज्ञा में पूरा होता है कि “जैसे तुम अपने से
प्रेम करते हो वैसे ही दूसरों से भी करो।” 15परंतु यदि तुम एक-दूसरे को
फाड़ डालने और निगल जाने के लिए तैयार हो तो सावधान, वरना तुम
एक-दूसरे को बर्बाद कर दोगे।

5:14 लेवी 19:18,34

पवित्र आत्मा के फल

16मैं कहता हूँ, परमात्मा की पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में चलो,
तब तुम सांसारिक स्वाभाव की बुरी इच्छाओं को पूरा नहीं करोगे।
17क्योंकि सांसारिक स्वाभाव की इच्छाएँ पवित्र आत्मा के विरुद्ध
काम करती हैं और पवित्र आत्मा सांसारिक स्वाभाव के विरुद्ध। इन
दोनों का आपस में विरोध है। इसी कारण तुम जो करना चाहते हो,
वह नहीं कर पाते। 18परंतु यदि तुम पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में चलते
हो तो तुम मोशे के नियम और शिक्षा के अधिकार के अधीन नहीं।
19अब सांसारिक स्वाभाव के फल स्पष्ट हैं - अवैध सम्बन्ध, अपवित्र
काम, घिनोने काम, 20मूर्तियों की भक्ति, जादू-टोना, दुश्मनी रखना,
लड़ाई-झगड़ा, जलन रखना, गुस्सा से भरे रहना, स्वार्थी, फूटडालना,
गुटबाज़ी, 21किसी की चीज़ का लालच,+ नशा करना, रंगरलियाँ मनाना
और इस प्रकार के अन्य बुरे काम। मैं इनके बारे में तुमसे कह देता हूँ
जैसा कि पहले भी कह चुका हूँ, कि ऐसे कर्म करने वाले परमात्मा के
साम्राज्य के वारिस नहीं होंगे।

22परंतु पवित्र आत्मा के फल ये है कि हम दूसरों से प्रेम करते हैं, हम
खुश रहते हैं, हम शांति से रहते हैं, हम हर स्थिति में सबर से काम लेते
हैं, हम दया दिखाते हैं, हम भलाई करते हैं, लोग हम पर भरोसा कर
सकते हैं, 23हम लोगों से कोमल व्यवहार करते हैं और आत्मसंयम
रखते हैं। तो ऐसा कोई कानून नहीं जो इन्हें करने से मना करे। 24जो
लोग मुक्तिदाता येशु की शरण में हैं, उन्होंने अपने सांसारिक स्वाभाव
के साथ-साथ बुरी लालसा को भी मार डाला है। 25परमात्मा की पवित्र
आत्मा ने हमें जीवन जीने का एक नया तरीका दिया है, और इसलिए
हमें पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में चलना चाहिए। 26हम घमंडी न बनें,
एक-दूसरे को न भड़काएँ और एक-दूसरे से जलन न रखें।

6

जैसे कर्म वैसा फल

1भक्त भाइयो और बहनो, यदि तुम्हें पता चले कि कोई पाप के जाल
में फंसा हुआ है तो तुम जो पवित्र भक्त हो उसे प्यार से सही मार्ग पर
चलने में मदद करो। पर ध्यान रखो कि कहीं तुम भी उस जाल में फंस

न जाओ। [2]जब तुम एक दूसरे की मदद के लिए हाथ बढ़ाते हो तो तुम
मुक्तिदाता के नियम का पालन करते हो। [3]यदि तुम कुछ न होने पर
भी अपने आप को बहुत बड़ा समझते हो तो तुम अपने आप को धोखा
देते हो। [4]तुम अपना काम अच्छी तरह से करो, और तब तुम्हारे पास
गर्व करने के लिए कुछ होगा। लेकिन अपनी तुलना दूसरों से न करो।
[5]क्योंकि हम में से प्रत्येक अपने आचरण के लिए ज़िम्मेदार है।
[6]जिन्हें परमात्मा के संदेश की शिक्षा दी जा रही है, वह अपने सिखाने
वालों के साथ अपनी सब अच्छी चीज़ों को बाँटे।
[7]अपने आप को मूर्ख मत बनाओ। परमात्मा को धोखा देना संभव
नहीं है, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। [8]यदि तुम
अपने सांसारिक स्वाभाव के बीज बोते हो, तो तुम बर्बादी की फसल
काटोगे, लेकिन यदि तुम परमात्मा की पवित्र आत्मा के लिए बीज
बोते हो, तो तुम पवित्र आत्मा से मोक्ष की फसल काटोगे। [9]हम अच्छे
काम करते हुए न थकें। यदि हम हार नहीं मानते हैं तो हम परमात्मा के
आत्मिक आशीर्वाद की फसल ठीक समय पर काटेंगे। [10]इसलिए जहाँ
तक हो सके हम सबके साथ भलाई करें, खासतौर पर भक्त भाइयों
और बहनों के साथ।

अंतिम चेतावनी

[11]देखो, मैं तुमको कैसे बड़े-बड़े अक्षरों में अपने हाथ से लिख रहा
हूँ। [12]जो लोग तुमको चीरा-संस्कार कराने के लिए मजबूर करने की
कोशिश कर रहे हैं, वे दूसरों के सामने अच्छा बनना चाहते हैं। वे यह
शिक्षा देकर मुसीबत में नहीं पड़ना चाहते कि हम केवल मुक्तिदाता
के क्रूस पर बलि के माध्यम से ही धर्मी बना जा सकता है। [13]उनका
चीरा-संस्कार तो हो गया है, परंतु वे पूरे मोशे के नियम और शिक्षा का
पालन नहीं करते। वे केवल इतना चाहते हैं कि तुम्हारा चीरा-संस्कार
करा कर शेखी मारे। [14]परंतु परमात्मा न करे कि मैं केवल अपने
मुक्तिदाता प्रभु येशु की क्रूस और उनके अलावा किसी अन्य बात पर
गर्व करूँ। मुक्तिदाता के क्रूस पर अपनी जान देने के कारण, मैं इस
संसार के बुरे तौर-तरीको के लिए मर चुका हूँ, और वे बुरे तौर-तरीके
मेरे लिए मर चुके हैं। [15]इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम्हारा

चीरा-संस्कार हुआ है या नहीं। केवल यह मायने रखता है कि तुम्हें
परमात्मा ने नया व्यक्ति बनाया है। [16]और जितने इस शिक्षा को मानते
हैं, उन पर और इज़राएल देश में परमात्मा के लोगों पर शांति और
कृपा हो।
[17]अब से मुझे कोई परेशान न करे। मैं यह इसलिए कहता हूँ क्योंकि
मेरे शरीर पर चोट के निशान हैं। ये चोट के निशान उन लोगों ने दिए हैं
जिन्होंने मुझे पीटा क्योंकि मैं प्रभु येशु के बारे में प्रचार करता हूँ।
[18]भक्त भाइयो और बहनो, हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु की कृपा तुम्हारे
साथ रहे। तथास्तु।